जनजातीय समाज में लड़की की शादी में ससुराल से मेहमान आए उस वक्त गाए जाते गीत

डॉ. लविन्द्रसिंह लबाना
सह आचार्य,
हिंदी विभाग,गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय,वड़ोदरा

लोक साहित्य लोगों के द्वारा रचित सामूहिक रचना है। लोक साहित्य में मानव जीवन धड़कता है। इस संसार में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का अपना लोक साहित्य है। लोक साहित्य सूक्ष्म रूप में जीवंत रूप है। भारत एक विशाल देश है। जिसमें विभिन्न संस्कृति और जाति के लोग बसते हैं। अलग-अलग संस्कृतियों की अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। इसका सच्चा दर्शन भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त लोकगीतों में मिलता है। प्राचीन परंपरा में सुरक्षित और लोकजीवन में सूत्र की तरह गुंथे यह लोकगीत स्थान, काल और जातियों की सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक, राजनैतिक परिस्थिति का संपूर्ण दर्शन कराते हैं। इसकी प्रत्येक पंक्ति में लोग जीवन स्पंदित होता दिखाई देता है। लोकगीतों में स्थानीय भूगोल, प्रथाएं, लोक विश्वास, रीति- रिवाज, रहन-सहन आदि का उल्लेख मिलता है। इन लोकगीतों की रचना गीतकारों ने किसी बंद कमरे में नहीं की बल्कि स्वयं उनके द्वारा रचना की गई है। प्रकृति की गोद में खेलने वाले मनुष्य-उसकी लोक संस्कृति प्रत्येक क्षेत्र या जाति के लोकगीतों में निखरती हैं।

लोकगीत लोगों की सामूहिक भावना का साहित्य है। परिवार इसका सबसे मजबूत घटक है। अलग-अलग जातियां अलग-अलग समय पर इसमें कुछ न कुछ जोडती रहती हैं। लोकगीत विभिन्न युगों, प्रांतों, जातियों और जनजातियों के विभिन्न रीति-रिवाज विचारों और परंपराओं को प्रतिबिंबित करते रहे हैं। कई वर्षों से इन पारंपरिक लोकगीतों के रचनाकारों ने अपनी पसंद के अनुसार इसमें कुछ न कुछ जोड़ा और गाया है। गुजरात राज्य के दाहोद जिल्ले में जनजातीय बस्ती बहुल मात्रा में है। जहां लोकसंस्कृति और लोकगीत का जतन किया गया है। आज भी इस क्षेत्र के आदिवासी समाज का लोक साहित्य पारंपरिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी जनता की जुबानी पर चला आया है। आदिवासी भाई-बहन अपने सभी त्योहार होली, दिपावली और शादी के प्रसंग में गीत गाकर शुरुआत करते हैं।

प्रस्तुत लेख में गुजरात राज्य के दाहोद जिल्ले में रहने वाले आदिवासी समाज में लड़की की शादी में ससुराल से मेहमान कपड़े और गहने देने आते हैं, उस समय की रसम में गाये गए गीतों की बात की गई हैं। उस विस्तार में आदिवासी समुदाय के अलग-अलग जाति के लोगों ने अपनी लोक संस्कृति के कारण लोक साहित्य में एक अलग पहचान बनाई है। आदिवासी समाज में बेटी की शादी हो या बेटे की हर शादी के अवसर पर महिलाएं उत्साह के साथ पारंपरिक गीत गाती है। आदिवासी समाज में जब दुल्हन के ससुराल से मेहमान आते हैं तो समाज के आमंत्रित मेहमानों को दुल्हन के घर के सामने पंक्तिबद्ध खड़ा कर दिया जाता है। दुल्हन की मां मेहमानों के लिए दीपक जलाती है, धरती माता को तिलक किए गए कपड़े से मेहमानों को एक-एक करके तिलक करती है। फिर

सभी गांव के मेहमान रिश्तेदार एक पंक्ति में खड़े होकर दोनों हाथों में हाथ मिलाकर राम राम, जय सद्गुरु साहब,जय गुरु मालिक, जय श्री कृष्ण आदि कहते हुए उनका स्वागत करते हैं। इसके बाद सभी मेहमान आराम से वहीं बैठ जाते हैं जहां उनके बैठने की व्यवस्था की गई है। मेहमानों को पानी, चाय, बीड़ी आदि भी दिया जाता हैं। ससुराल से मेहमान आते हैं तब दुल्हन के मोहल्ले में एक नया माहौल बन जाता है क्योंकि परिवार या समाज से दुल्हन के साथ दुल्हन के घर आई सभी महिलाएं हंसी मजाक के अंदाज में समूह गान में अपनी आवाज में पूरे जोश के साथ विभिन्न प्रकार के गीत गाती है,जिसमें आदिवासी समाज की संस्कृति के दर्शन होते हैं। घर में मेहमानों के बैठने पर गाए जाने वाले गीत उन्हीं की बोली में इस तरह है-

"ओरे वेवाईयो तमे कईनी वाटे आव्या...(२)
आवळीयाना सिगला मेली अवळी वाटे आव्या...(२)
वाटे नथी आव्या तमे उभी टेरे आव्या...(२)
ओरे वेवाईयो तमे कईनी वाटे आव्या...(२)"

प्रस्तुत गीत गांव की सभी आमंत्रित स्त्रियां दुल्हन के आसपास बैठकर एक लय में गाती है। यहाँ स्त्रियां गीत के माध्यम से वेवाई बनकर आए मेहमानों की मज़ाक करती हुई सुनाती है कि हमारे गांव का जो पुराने आँवले के वृक्ष वाला रास्ता है, उस ओर से न आकर आप उबेट वाले उलटे रास्ते से आ पहुंचे हैं। यहाँ स्त्रियां लड़के पक्ष से आए मेहमानों की अलग-अलग तरीके से मज़ाक गीत गा कर करती हैं। जैसे कि-

"मारा घर नी पछवाड़े रें लींबड़ी झोला खाय...(२)
मारा घर नी पछवाड़े रें उंटड़ी पालों खाय...(२)
वेवाई दूध नो सवाधियो रें उंटड़ी ने तांबा जाय...(२)
एनी आईजी मारी लात रें...आई बाई करतो जाय...(२)
मारा घर नी पछवाड़े रें लींबड़ी झोलां खाय...(२)"

प्रस्तुत गीत में समधन स्त्रियां समधियों की मजाक करती हुई रहती है कि समधी मेरे घर के पिछवाड़े नीम का वृक्ष झोला खा रहा है। उस वृक्ष के पत्ते ऊँट खा रहे हैं। आने वाले समधी ऊंट के दूध पीने के चटोरे है। वहां वह ऊंट का दूध निकालने जाता है तब उसे लात लगती है और समधी आई-बाई करते हुए भागते है। ऐसा कहकर प्रस्तुत गीत में समधन समधियों को केंद्र में रखकर पूरे प्रसंग में मजाक करके सभी को हास्य रस का पान करवाती है।

आदिवासी समाज में लड़की की शादी में लड़के की ओर से कपड़े और गहने लेकर मेहमान आते हैं उस वक्त कन्या पक्ष की स्त्रियां समधियों की तो मजाक मस्ती करती है उसके साथ समधनों की भी मजाक करने से नहीं चूकती -

"तूं ते वेवाई आयो तारी ने केम नी लायो...(२)
लावतो ते आवती कठला देखी जाती...(२)
लावतो ते आवती मारा भाई ने देखी जाती...(२)
लावतो ते आवती मारा काका ने देखी जाती...(२)
तूं ते वेवाई आयो तारी ने केम नी लायो...(२)

प्रस्तुत गीत में लड़की पक्ष की स्त्रियां समधियों को कहती हैं कि आप हमारी बहन के घर हमारे गांव में मेहमान बनकर आए तो आपके साथमें हमारी समधन को भी लेकर आना चाहिए था। समधन भी हमारा गांव,घर और

हमारे भाई, काका को भी देख-पसंद कर लेती। ऐसी बात गीत में गा कर समधनों की अच्छी मज़ाक कर के आनंद लेती हैं।

गुजरात प्रदेश का दाहोद जिल्ला मध्य प्रदेश और राजस्थान की सीमा पर स्थित है। वहां के जनजातीय समाज में खास तौर पर मध्यप्रदेश और कुछ राजस्थान में भी परस्पर शादियां होती है। यहां के जनजातीय समाज का रिवाज है कि लड़की की शादी का प्रारंभ उसके ससुराल से आए मेहमानों से होता है। समधी बनकर आए मेहमान लड़की को तिलक करने, गहने पहनाने और उसी के साथ उसका दहेज तय करने आते हैं। लड़की का दहेज अच्छे से तय हो जाता है तो शादी पक्की हो जाती है। अगर उसमें कुछ बोलचाल या दहेज कम- ज्यादा लगता है तो वर पक्ष से आए हुए मेहमान वापस भी लौट जाते हैं और शादी नहीं होती। जनजातीय समाज में अनपढ़ या दसवीं तक पढ़ी हुई लड़की, शिक्षिका बनी हुई लड़की या उससे आगे पढ़ी हुई लड़की के दहेज की रकम अलग-अलग है। इसके साथ-साथ वर पक्ष की ओर से कन्या के लिए डेढ़ किलो चांदी और 10 ग्राम सोना के गेहने भी लेना तय होता है। इसी कारण जनजातीय समाज में शादी के बाद पति-पत्नी को मजदूरी पर जाना पड़ता है और आर्थिक संघर्ष में जीना पड़ता है । इस जनजातीय समाज में यह दहेज प्रथा ही समाज को अधोगति के मार्ग पर ले जाती है। समाज में दहेज प्रथा कलंक रूप है । कई लोग इसके सुधार के लिए प्रयास करते हैं फिर भी कुछ-कुछ परिवर्तन हुआ है। गांव के पंचों की सामाजिक व्यवस्था के कारण आज भी जनजातीय समाज में दहेज प्रथा विद्यमान है, जो एक रिवाज बन गया है।

लड़की का दहेज तय होने के बाद वर पक्ष की ओर से आए मेहमान लड़की को साड़ी आदि कपड़े देते हैं और लड़की की माता को भी साड़ी देते। इस समाज मे शादी की पहली रसम लड़कीको पाटले पर बैठा कर हल्दी लगाई जाती है। इसमें लड़की अपने ससुर पक्ष से आए नए वस्त्र पहनकर पाटले पर बैठती है। इस रसम में लड़की के आसपास खड़ी हुई स्त्रियां लड़की और समधियों को ध्यान में रखकर कुछ गीत गाती हैं जो जनजातीय समुदाय के लोकजीवन का परिचय करवाती है। जैसे –

"कोने पुछीने पाटले बैठा हो बीना...(२)
तमारे बापू ते चिंताम पड्या हे बीना...(२)
तमारे माता ते रडवा लागी हे बीना...(२)
तमारे वीरा ते परदेश पड्या हे बीना...(२)
तमारे भोजाई ते झगडे आवी हे बीना...(२)
तमारे काका ते चिंता करे हे बीना...(२)
तमारे काकी तो झगड़ो करवानी बीना...(२)
तमे ते परणवा हबाया बीना...(२)
तमे ते परणु वोरू हे बीना...(२)
तमे ते सासरी वोरी हे बीना...(२)
कोने पुछीने पाटले बैठा हो बीना...(२)

प्रस्तुत गीत में लड़की को पहली बार हल्दी दी जाती है तो उसे पाटले पर बिठाया जाता है। तब सभी महिला यह गीत गाती है। वे सभी लड़की को कहती है की बहन आप किसकी इजाजत लेकर पाटले पर बैठी हैं। आपके पिताजी चिंता में हैं, माताजी रो रही है, भाई परदेस हैं, भोजाई झगड़ रही है, काका चिंता कर रहे हैं इत्यादि सभी स्वजन आपकी शादी के निर्णय से चिंतित है। ऐसा करुण भाव प्रस्तुत गीत में दिखाई देता है।

लड़की जन्म से ही पराया धन होती है। कोई भी समाज हो लड़की की अठारह साल की उम्र होती है तभी से परिवार गांव या समाज वाले सभी उसकी शादी की चिंता करते हैं। हिंदू समाज में कोई लड़की आमतौर पर कुंवारी नहीं रहती। इसी बात को करुण भाव के साथ पाटले पर बैठी हुई लड़की को आसपास बैठी हुई स्त्रियां अपने स्वर में गीत सुनाती है -

"पाटले बेसी जाहो खरूं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
बापू छोड़ी दीधा खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
माता छोड़ी दीधा खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
वीरा छोड़ी दीधा खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
बेनो छोड़ी दीधी खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
भाभीओ छोड़ी दीधी खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
काकाओ छोड़ी दीधा खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
काकीओ छोड़ी दीधी खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
मामाओ छोड़ी दीधा खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
मामीओ छोड़ी दीधी खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
दोस्तो छोड़ी दीधा खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
परणु वोरी लीधु खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
सासरी वोरी लीधी खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)
पाटले बेसी जाहो खरुं बेनी कोण के हे कुंवारा...(२)

प्रस्तुत गीत में पाटले पर बैठी हुई लड़की को आसपास बैठी हुई सभी स्त्रियां गीत के स्वर में कहती है कि आज से बहन आप पराए घर की बहू बन गए हो। इसीलिए अब आपको परिवार या गांव से कोई भी कुंवारे हो ऐसा नहीं कहेंगे। उसके साथ-साथ ऐसा भी सुनाती है कि पिताजी,माताजी, भाई, बहन, भाभी, काका, काकी, मामा, मामी, दोस्ती सभी को छोड़कर आपने शादी करके ससुराल प्राप्त कर लिया है, ऐसा करुण भाव इस गीत में व्यक्त किया गया है।

जनजातीय समाज मे जीवन के सभी अच्छे-बुरे प्रसंगों में लोकगीतों के माध्यम से अपने मन की बात रखी जाती हैं। ऐसे लोकगीतों के कारण लोक साहित्य समृद्ध होता जा रहा हैं। यहां गॉव की महिलाएं लड़की को लोकगीत के भाव में सुनाते हैं ऐसा नहीं, वे स्वजनों को दहेजप्रथा का जिक्र करती हुई अपना दर्द गीत के रूप में सुनाती है-

"वीरा रे तमारे हानी पड़ी रेंड बेनी ने वेसी मार्या...(२)
भोजाई रे तमारे हानी पड़ी रेंड बेनी ने वेसी मार्या...(२)
आंबो वेचता महुड़ो वेचता बेनी ने रेवा देता...(२)
बापू रे तमारे हानी पड़ी रेंड दीकरी ने वेसी मार्या...(२)
माता रे तमारे हानी पड़ी रेंड दीकरी ने वेसी मार्या...(२)
लींबड़ो वेचता कणजी वेचता बेनी ने रेवा देता...(२)
बेनो रे तमारे हानी पड़ी रेंड बेनी ने वेसी मार्या...(२)
बनवी रे तमारे हानी पड़ी रेंड साळी ने वेसी मार्या...(२)
हागड़ा वेचता खांखरा वेचता बेनी ने रेवा देता...(२)
वीरा रे तमारे हानी पड़ी रेंड बेनी ने वेसी मार्या...(२)

प्रस्तुत लोकगीत में गीत सुनाने वाली महिलाएं लड़की के संबंधियों को संबोधित कर कहती है कि है भाई, भोजाई, बापू, माता, बहन, जीजाजी सभीको ऐसी पैसे की भीड़ आ गई थी कि आपने घर की लड़की की शादी में दहेज लिया। आपको इस आर्थिक भीड़ को पूरा करने के लिए घर के नीम, सागवान, महुआ आदि वृक्षों को बेचकर आप इस मुसीबत को पूरा कर सकते थे। लेकिन आपने आपकी आर्थिक मुसीबत और कर्ज चुकाने के लिए लड़की को बेच दिया है। यह बात कहकर महिलाओं ने जनजातीय समाज में लड़की की शादी में दहेज लिया जाता है, उस व्यथा को प्रकट किया है।

कन्या पाटले के ऊपर बैठी हुई है तब ससुराल पक्ष से आए हुए मेहमान कन्या के हाथ में श्रीफल शगुन के रूप में देते हैं और होने वाला देवर तिलक करता है। ससुराल पक्ष से आई सभी वस्तुएं सहर्ष स्वीकार करने की बात और सगुन देने वाले साफ-पवित्र मन से दें ताकि भव सुधर जाएं इस बात का जिक्र प्रस्तुत गीत में व्यक्त किया है-

"आवता नारियेळा रे लाडी बेन झेली लेजो रे बेनी...(२)
आवता चांदलिया रे लाडी बेन झेली लेजो रे बेनी...(२)
आवता सासरीया रे लाडी बेन झेली लेजो रे बेनी...(२)
आवता नारियेळा रे लाडी बेन झेली लेजो रे बेनी...(२)"

फिर गाती हैं-

"नारियेळ झेलाडे ते बराबरी झेलाड जे, भव नी भूल रई जाहे...(२)
चांदलो करे तो बराबरी करजे,जिंदगी नी भूल रही जाहे...(२)

लोकगीत ऐसा माध्यम हैं कि अपने मन की बात, अपने विचार स्त्रियां मजाक स्वरूप में भी व्यक्त कर देती है, यही लोकगीत की विशेषता है। यहां कन्या पक्ष की महिलाएं समधी बन कर आए हुए मेहमानों की मज़ाक करती हुई गाती हैं -

"ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)
कया वेवाई ने काणी आंख...(२)
ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)
रमेश वेवाई ने काणी आंख...(२)
ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)
कया वेवाई ने खांडो दांत...(२)
ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)
रमसु वेवाई ने खांडो दांत...(२)
ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)
कया वेवाई ने बुसूं नाक...(२)
ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)
फकरु वेवाई ने बुसूं नाक...(२)
ओळे ने ओळे वेवाई बेठा...(२)"

पस्तुत गीत में कन्या पक्ष की महिलाएं आए हुए समधियों के सामने बैठकर उनके बारे में उल्टा-सीधा बोलकर मजाक करती हैं। शादी-ब्याह में यह सबकुछ चलता रहता है। कन्या को जो चीजें सगुन के रूप में दी जाती हैं वह कैसे खरीदी गई हैं उसे मजाक स्वरूप में गाती हुई कहती हैं –

"वेवाई हुं वेसी ने लायो मने कही दे साची वात...(२)
तारी बेन घरणे मेली मने कही दे साची वात...(२)
तारी भोजाई घरणे मेली मने कही दे साची वात...(२)
तारी बैरी घरणे मेली मने कही दे साची वात...(२)"

आदिवासी समाज में लड़के या लड़की की किसी की भी शादी हो, उसमें भोजन समारंभ रखा जाता है। शादी नजदीक आती है उससे पहले अपने परिवार, मोहल्ले के लोग एकत्रित होकर पलाश के पेड़ से पत्ते तोड़कर लाते हैं और नीम के पेड़ की सूखी हुई सलियों से बाज और दोने बनाते हैं। जिसका उपयोग भोजन करने में लेते हैं। उनके भोजन में वाकई गांव और जनपद की जमीन जंगल से जुड़ी खुश्बू आती है। कन्या पक्ष की महिलाएं समधी पंगत में भोजन करने बैठते हैं तब मजाक करती हुई गाती है –

"रमसु नानो कोळ मोटो कोळ डासूं फाटी जाहे.. (२)
रमेश नानो कोळ मोटो कोळ डासूं फाटी जाहे.. (२)
सबुर नानो कोळ मोटो कोळ डासूं फाटी जाहे.. (२)"

और आगे गाती हैं -

"मार डूंसे डूंस खाय रे वेवाई काले नो भूसो आयो...(२)
मार डूंसे डूंस खाय रे रमसु काले नो भूसो आयो...(२)
मार डूंसे डूंस खाय रे रमेश काले नो भूसो आयो...(२)
मार डूंसे डूंस खाय रे सबूर काले नो भूसो आयो...(२)
मार डूंसे डूंस खाय रे वेवाई काले नो भूसो आयो...(२)"

प्रस्तुत गीत में समधन लड़की के ससुराल से आए समधीओं की भोजन के वक्त मजाक करके आनंद लेती है। इस गीत में समधियों की मजाक में हास्य रस भी प्रकट होता है। लोकगीतों में वर पक्ष हो या कन्या पक्ष, आमने-सामने स्त्रियां गाकर कुछ भी कहती है फिर भी किसी को बुरा नहीं लगता है। यही प्रसंग ऐसा है जिसमें जो बातें अकेले में नहीं होती वह जाहिर में गीत गाकर आनंद लेते हुए कही जाती है।

भोजन के बाद आए हुए मेहमान को विदा किया जाता है। उस वक्त भी मेहमानों को गीत गाकर विदाई किया जाता है -

"जे रामजी, जे रामजी, बधां वेवाई जे रामजी झेली लेजो...(२)
जे रामजी, जे रामजी, रमसू वेवाई जे रामजी झेली लेजो...(२)
जे रामजी, जे रामजी, रमेश वेवाई जे रामजी झेली लेजो...(२)
जे रामजी, जे रामजी, सबूर वेवाई जे रामजी झेली लेजो...(२)
जे रामजी, जे रामजी, बधां वेवाई जे रामजी झेली लेजो...(२)"

इस तरह दाहोद के आदिवासी समाज में कन्या की शादी तय करने के लिए वर पक्ष से मेहमान आते हैं तब अलग-अलग रसम-रिवाज की परंपरा है। मेहमान आते हैं तब उनका स्वागत किया जाता है। इसके बाद चाय-पानी पीकर कन्या का दहेज तय होता है। उसके बाद कन्या को तिलक करके शगुन के रूप में श्रीफल, कपड़े और गहने दिए जाते हैं। इसके बाद भोजन करके विदाई होती है। उस समय अलग-अलग रसम में गीत गाए जाते हैं इस गीत का संकलन झितरीबहन, सवलीबहन, सुनीताबहन इत्यादि से किया है। वहाँ जनजाति क्षेत्र में शादी-

ब्याह, मृतक प्रसंग या नवरात्रि हो, कोई भी धार्मिक प्रसंग हो, उसमें अलग-अलग गीत गाकर त्यौहार मनाएं जाते हैं। जनजाति क्षेत्र में अपनी बातको, आनंद को या दुख-दर्द को अपने भाव में व्यक्त करती है, वही लोकगीतों में प्रकट होती हैं। वही क्षेत्र मेरी जन्मभूमि भी है।